समीक्षा :

सुधा ओम ढींगरा की : 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ'

समीक्षक : डॉ. सीमा शर्मा

प्रवासी साहित्य को लेकर हिन्दी जगत में कई तरह की विचार धाराएँ हैं। कई विद्वान इसे स्वीकार करते हैं और सराहते भी हैं तो वहीं कुछ लोग इसे सिरे से नकारने का प्रयास करते हैं। ये व्यक्तिगत भिन्नताएँ हैं। सभी की अपनी सोच होती है और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी है। परन्तु सुधा ओम ढींगरा जैसे प्रतिभाशाली साहित्यकार इन तमाम वाद और विवादों से परे पूरे साहस ईमानदारी और निष्ठा से अपने सृजन कार्य में रत हैं। यह भी तय है कि समय के साथ साथ ऐसे सामर्थ्यवान साहित्यकारों का मूल्यांकन भी होगा और उनके महत्व को भी स्वीकार किया जाएगा। जो मूल्यवान होगा समय के साथ उसकी पहचान अवश्य होगी। चार कहानी संग्रह, चार कविता संग्रह, एक उपन्यास व अन्य रचनाएँ लिखकर सुधा ओम ढींगरा ने प्रवासी साहित्यकारों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। उनके लेख की जो शैली है उससे पाठक उनकी रचनाओं के साथ स्वयं को जुड़ा हुआ पाता है। कहानियों में देश काल और वातावरण भले ही अमरीकी हो परन्तु भावात्मक स्तर पर कहानियों में भारतीयता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। लेखिका की भावनाएँ संवेदनाएँ और अनुभव पाठक को और भी समृद्ध बनाते हैं। उनकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से भी बहुत समृद्ध और वैविध्यपूर्ण हैं। दस प्रतिन्ति कहानियाँ कहानी संग्रह इसका प्रमाण है।

इस संग्रह की पहली कहानी 'बेघर सच' में एक पारम्परिक विषय का चयन किया गया है। जिसे लेकर कहा जा सकता है कि इस विषय पर तो पहले भी बहुत लिखा जा चुका है। फिर नया क्या है? परन्तु यह एक ऐसा विषय है जिसकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी पूर्व में रही होगी। बेघर सच में तीन पीढ़ियों के पात्र हैं जो स्त्री को अलग अलग स्तर पर बेघर बनाने का कार्य करते है। इससे केवल पुरूष पात्र ही नहीं स्त्री पा? भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हैं यही पितृसत्ता का प्रभाव है जिसमें स्त्रियाँ जिस व्यवस्था के कारण शोषित हैं उसी का अंग बन जाती हैं। ऐसे में यह पंक्ति बहुत याद आती है –"स्त्रियाँ पैदा नहीं होती बनाई जाती हैं।" इस कहानी में रंजना की माँ अपना घर तो नहीं तलाश पाती है लेकिन अपनी बेटी के लिए इतना अवश्य करती है –"तुम्हें कमरा मिलेगा और जब तक मैं जिन्दा हूँ यह घर तुम्हारा भी है।" एक स्त्री के सथ कैसी विडम्बना है जिस घर में उसका जन्म होता है वह घर उसका नहीं होता और जिस घर में ब्याह कर जाती है वह भी नहीं।रंजना की माँ सुनयना ने इस सच को भोगा तब यह सोचा जा सकता था कि यदि वह आत्मनिर्भर होती तो संभवतः स्थिति इससे भिन्न होती परन्तु जब रंजना को भी इसी बेघर सच का सामना करना पड़ता है तो प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है पति संजय के बराबर पढ़ी लिखी उसी के समान वेतन पाने वाली रंजना भी इसी सच से गुजरती है। "तिनका तिनका चुनकर नर मादा नीड़ बनाते हैं, फिर वह नीड़ सिर्फ नर का कैसे हो जाता है? मादा का अधिकार उस पर क्यों नहीं रहता? रंजना नवचेतना सम्पन्न युवती वह समस्याओं के आगे घुटने नहीं टेकती। प्रश्न करती है प्रश्नों के जवाब भी पाना चाहती है कुछ के उत्तर मिल जाती हैं और कुछ अनसुलझे ही रह जाते हैं। वह हार नहीं मानती हैं और बेघर से अपने घर तक का सफर तय करती है।

इस संग्रह की एक अन्य कहानी 'क्षितिज से परे' को यदि बाहरी तौर पर देखें तो बेघर सच से बिल्कुल अलग दिखाई देती है क्यों यह कहानी एक प्रोफेसर पति और एक गृहिणी की कहानी है। सारंगी अपने पति सुलभ से चालीस वर्षों के साथ के बाद विवाह विच्छेद के लिए आवेदन करती है और पूरी दृढ़ता के साथ के करती है। इतने वर्षों के साथ के बाद ऐसा निर्णय लेना किसी के लिए भी आसान नहीं हों सकता। इस कहानी को सीधे सरल ढंग से पढ़कर कोई निष्कर्ष निकालना कठिन कार्य है। इस कहानी में कई कोण है, कई परते हैं जिन्हें मनोवैज्ञानिक स्तर पर समझने की आवश्यकता है।'बेघर सच' और 'क्षितिजि से परे'इन दोनो कहनियों में एक समन हैं कि रंजना और 'सारंगी' दोनो ही बेघर होने की यातना को झेल है। सारंगी के रूप में लेखिक ने उन सभी गृहिणियों की वेदना को मुखरित किया जो, अस्तिव होनता के बोध में जीती है। सारंगी के शब्दो में–"मैने घर परिवार संभाला और इन्होने बाहर।फिर एक बुद्धमान कहलाए और दूसरा बेवकूफ—क्यों? "कहने को तो यह एक वाक्य भर है परन्तु एक बहुत बड़े वर्ग की वेदना इसमें छिपी है।

संग्रह की दूसरी कहानी कमरा नंबर 103 कोमा में गए एक ऐसी स्त्री पात्र (मिसेज कमलेश वर्मा) की कहानी है। जिसका शरीर निष्क्रिय है परन्तु श्रवण इन्द्रियाँ और मस्तिष्क पूर्ण रूप से सक्रिय है। कहानी दो नर्सों के सवांद से आगे बढ़ती है। सुधा ओम ढींगरा ने इस कहानी में मनो विश्लेषणात्मक शैली का का उपयोग किया है, जिससे कहानी और भी मार्मिक बन गई है। मिसेज वर्मा केवल एक कहानी का पात्र न रहकर प्रतीक बन जाती है उन तमाम लोगों की जो अपने बच्चों पर भरोसा करके अपनी सब जमा पूंजी उन्हें सोंप देते हैं और उनके साथ चल पड़ते हैं पर वहाँ सच्चाई कुछ और होती है। उनका जीवन कितना दुर्गम हो जाता है। वहाँ की भाषा जीवन शैली विचार धारा खान पान उनसे नितान्त भिन्न है। उन परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना उनके लिए एक मुश्किल बन जाता है। वे एक अकेलेपन में फँस जाते हैं। जिनके लिए वे अपना सब कुछ छोड़ आए थे उन्हीं के लिए वे बोझ बन जाते हैं, जिसे वे उतार फेंकना चाहते हैं लेखिका नर्सों' के माध्यम से इस स्थिति से बचने का संदेश देती है।

समलैंगिकता एक ऐसा विषय है जिस पर हिंदी में शायद ही कोई महत्वपूर्ण रचना लिखी गई हो। आग में गर्मी कम क्यों है में सुधा ओम ढींगरा ने इसी संवेदनशील विषय पर अपनी लेखनी चलाई है और इस समस्या के विविध पक्षों को समझने का प्रयास किया है। लेखिका की विशेषता है जब वे किसी विषय पर लिखती हैं तो उस विषय पर उनकी पकड़ होती है यही कारण है कि उनके लेखन में एक सन्तुलन दिखाई देता है। वे ख्याति पाने के लिए किसी शार्टकट का प्रयोग नहीं करती। कई कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आसानी से अंतरंग दृश्यों को उकेरा जा सकता था परन्तु वे किसी लेखन को विशिष्ट बनाती हैं और महत्वपूर्ण भी। इससे उनकी कहानियों में कहीं भी हल्कापन नहीं आने पाता बल्कि और भी अधिक गम्भीर बन जाती हैं।

वर्तमान में जहाँ स्त्री विमर्श पर चर्चा अधिक होती है वहाँ लेखिका पीड़ित पुरूष को भी अपनी कहानियों में स्थान देती है वह भी पूरी सच्चाई के साथ। वे समाज के जिस वर्ग में विसंगति देखती उस पर अपनी लेखनी चलाती हैं। उनके अनुभव का संसार बहुत वैविध्यपूर्ण है यही विविधता उनके लेखन में स्पष्ट परिलक्षित होती है। 'पासवर्ड' और 'वह कोई और थी' इन दोनों ही कहानियों में पुरूष शोषित है और स्त्री शोषक। दोनों कहानियों की पृष्ठ भूमि अलग है। कथानक अलग है पात्र योजना अलग है। फिर एक स्तर पर कहानियों में समानता दिखाई देती है। हमारी एक समान्य अवधारणा होती है कि स्त्रियाँ घर को जोड़ने में भरोसा रखती है तोड़ने में नहीं। ये दोनों कहानियाँ इस सच्चाई से सामना करती हैं कि हमेशा ऐसा नहीं होता वरन इससे उलट स्थितियाँ भी देखने मिलती है। दोनों कहानियों के नायक घर को बचाने का भरसक प्रयास करते हैं परन्तु जब वे समझ जाते हैं कि ऐसा संभव नहीं है तो वे इस रिश्ते से से बच निकलना ही ठीक समझते हैं। सुधा ओम ढींगरा की कहानियों के पात्र चाहे वह स्त्री हो या पुरूष स्वातंत्र्य चेतना से मुक्त हैं। वे अपने अस्तित्व के साथ एक सीमा तक समझौता करते हैं और उसके बाद वे स्वतंत्रता की राह चुनते हैं।

'टॉरनेडो' कहानी में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन के रूप में देखा जा सकता है। जहाँ लेखिका ने भारतीय संसर्ग की स्थापना करने का प्रयास किया है। हालांकि हर बार परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होती हैं। कौन सी जमीन अपनी कहानी में यह बात स्पष्ट हो जाती है जहाँ टॉरनेडो कहानी में भारतीय संस्कृति का उदात्त रूप देखने को मिलता है तो कहीं कौन सी जमीन अपनी में लालच से भरी स्वार्थी मानसिकता के दर्शन होते हैं।

'सूरज क्यों निकलता है' कहानी इस तथ्य को सामने लाती है कि घरमें बच्चों को जिस प्रकार के संस्कार दिदए जाते हैं वे एक सीमा तक उन्हें प्रभावित अवश्य करते हैं समय रहते यदि ध्यान न रखा जाए तो बाद में परिस्थितियों को बदलना लगभग असंभव हो जाता है। जेम्स, पीटर और उसके भाई बहन इस बात को प्रमाणित करते हैं। कुछ लोग मिलने वाली सुविधाओं का उपयोग सकारात्मक उददेश्यों के लिए करते हैं तो वहीं कुछ नकारात्मकता के लिए। जेम्स और पीटर दोनों ही ऐसे नकारा नवयुवक हैं जिनकी इच्छाएँ तो बहुत हैं परन्तु दूसरों के बल पर पूरा करना चाहते हैं।

'विष बीजा' प्रस्तुत कहानी संग्रह की एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने कई प्रमुख एवं संवेदनशील बिन्दुओं को एक साथ छुआ है। निजी स्वार्थों के चलते परिवार का विघटन फिर एक बालक का विभिन्न विपरीत परिस्थतियों का सामना करना। विभिन्न स्तरों पर उसका शोषण। एक बालक की ऐसी जीवन स्थितियाँ जो मानवता से अमानवता की ओर अग्रसर करती हैं। एक कुण्ठित व्यक्ति के रूप में उस बालक का विकास होना। उसका एक अपराधी और बलात्कारी के रूप में परिवर्तित हो जाना। लेखिका को उस बालक से सहानुभूति है परन्तु अपराधी बने उस व्यक्ति से नहीं। इसके पीछे जो भी कारण हो लेकिन गलत को सही नहीं ठहराया जा सकता। दोषी पात्र अपने दोष को जानता है तभी तो वह कहता है –"यह एक विकृत मानसिकता है जो हर देश हर शहर हर गाँव हर घर हर गली हर कूंचे में मिलेगी। इस मानसिकता के शिकार कई बार बहुत अपने भी होते हैं। बाप, भाई, चाचा, ताऊ, दूर करीब के रिश्तेदार कोई भी हो सकता है जिन्हें पहचानना मुश्किल होता है। लेखिका उस पात्र (अपराधी) के शब्दों के माध्यम से ऐसी समस्या से सामना कराया है जिसका समाधान आसान नहीं है। वैसे लेखिका ने उसी अपराधी पात्र के माध्यम से समस्या का समाधान भी देने का प्रयास किया है –" मैं अपने कृत्य पर शर्मिंदा हूँ। चाहता हूँ कड़ी सजा मिले और सजा में मेरा लिंग काट दिया जाए। एक लिंग कटेगा सौ लिंग सतर्क हो जाएँगे। यह जरूरी है। जहर का बीज वृक्ष बनने से पहले ही दब जाएगा। इस समाधान पर सबकी राय अलग अलग हो सकती है। यह लेखिका का अपनरा मत है।

सुधा ओम ढींगरा के कहानी संग्रह दस प्रतिनिधि कहानियों में न केवल उनकी प्रतिनिधि कहानियाँ हैं। बल्कि हिन्दी साहित्य की भी महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं जो हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने का कार्य करती हैं।

पुस्तक – दस प्रतिनिधि कहानियाँ
लेखक – सुधा ओम ढींगरा
प्रकाशक – शिवना प्रकाशन, सीहोर, म.प्र.
मूल्य – 100/–
समीक्षक– डॉ. सीमा शर्मा, मेरठ

समीक्षा :

एक कर्मयोगी की कथा–'सिफ़र से शिखर तक'

समीक्षक : डॉ0 वन्दना श्रीवास्तव

मेरे पति अधिशासी अभियंता उ0प्र0पा0कार्पो0लि0, श्री रविचन्द्र श्रीवास्तव ने बडे गर्व के साथ मुझे एक पुस्तक यह कहते हुए दी कि, "देखो मेरे एम0डी0 साहब ने कितनी अच्छी किताब लिखी है।" इसके पहले भी वे अनेक बार मुझे अपने प्रबंध निदेशक श्री ए0पी0 मिश्र की काव्य प्रतिभा, उनकी वार्तालाप शैली, व्यवहार कुशलता, के विषय में बताते रहे हैं और मुझे हर बार यह एहसास होता कि वे अपने एम0डी0 से किस सीमा तक प्रभावित हैं। अपने पति की साहित्यिक समझ पर मुझे हमेशा ही संदेह रहा है। इसलिए जब यह पुस्तक उन्होने मुझे दी तो पहला विचार मेरे मन में चुनौती का आया कि 'देखें, इनकी बहुत अच्छी रचना कितनी अच्छी है?' एक अध्यापक एवं साहित्य की थोड़ी बहुत समझ रखने वाली मैने एक आलोचनात्मक दृष्टि से यह रचना हाथ में ली।

'सिफर से शिखर तक' शीर्षक आकर्षक था। मुख पृष्ठ, जिसमें उड़ान भरते हुए पक्षी शीर्षक को और भी सार्थकता एवं गुरूत्व प्रदान कर रहे थे, ने उत्सुकता बढ़ा दी । इस रचना से गुजरते हुए ऐसा महसूस हुआ कि लेखक यद्यपि हिन्दी जगत के लिए एक बहुत पहचाना हुआ नाम नहीं है, किन्तु यह रचना आश्वस्ति जगाती है कि आने वाले समय में उसकी पहचान एक रचनाधर्मी कर्मयोगी के रूप में होगी। समय से टकराकर लहुलुहान होते, पुनः उठकर उसी रक्त से जीवन के शक्ति प्राप्त करते हुए कर्मपथ पर अग्रसर होते व सफलता के सोपान चढ़ते व्यक्ति की कथा है 'सिफर से शिखर तक'। ए0पी0 मिश्र द्वारा लिखित इस पुस्तक को जैसे–जैसे हम पढ़ते जाते हैं, तो हैरानी होती है कि किसी समय दाने–दाने को मोहताज व्यक्ति किस प्रकार इंजीनियर बन, एक उपखंड अधिकारी के रूप में अपने कार्य की शुरूआत करते हुए आज इतने बड़े विभाग के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित है और तब मुनव्वर राना ने इस पुस्तक के विशय में जो लिखा है कि, "यूँ तो कुछ लोग किताब लिखते हैं और कुछ खुद किताब होते है" की सार्थकता समझ में आती है।

"आत्मचिरत लिखने की प्रेरणा अंततः एक प्रकार के परिष्कृत अहंकार से ही मिलती है।" अज्ञेय की यह पंक्ति पता नहीं मिश्र जी की नजर से गुजरी है या नहीं, किंतु आत्मकथा लिखने में संकोच उन्हें अवश्य था। यही कारण है कि उनके गुरू अंगद जी महाराज ने जब उपरोक्त 'शीर्षक' उन्हें देते हुए उनसे आत्मकथा लिखने का आग्रह किया तो वे संकोच से भर उठे थे कि उनका जीवन ऐसा कुछ असाधारण तो नहीं है। इस पुस्तक की सार्थकता क्या होगा ?आदि। किन्तु इस रचना की सार्थकता यह है कि यह आम आदमी के भीतर यह विश्वास जगाती है कि निरंतर संघर्ष करते हुए, परिस्थितियों को पहचानने, उनसे लाभ उठाने की योग्यता, प्रतिकूल को अनुकूल में परिवर्तित करने की क्षमता का विकास, अपनी योग्यता पर विश्वास किसी भी आम आदमी को 'सिफर से शिखर तक' पहुँचा सकती है।

वास्तव में आत्मकथा लेखन एक जटिल प्रक्रिया है। गद्यकी अन्य विधाओं में लेखक दूसरों की जिंदगी, जीवन संघर्ष, उपलब्धियों आदि के बारे में लिखता है। अतः उन विधाओं की रचना–प्रक्रिया के तत्व और उनके स्वरूप निश्चित होते हैं, परन्तु आत्मकथा में लेखक अपने जीवन की कहानी खुद लिखता है। अतः इसकी रचना–प्रक्रिया के तत्व अन्य विधाओं के समान होते हुए भी अपनी प्रस्तुति में भिन्न होते है, जिसमें लेखक आपबीती को समकालीन जीवन और संसार से जोड़कर चित्रित करता है । तटस्थता, आत्मालोचन, एवं युगीन परिवेश से संबंध वे खास तत्व हैं जिनके बिना आत्मकथा की रचना संभव नहीं है। आत्मकथा में न ही कोई विषयवस्तु निर्धारित होती है और न ही अंतर्वस्तु, पर 'सिफर से शिखर तक' में ए0पी0 मिश्र जी ने इस बात का ध्यान रखा है कि जो भी प्रसंग अथवा घटनाएं चित्रित हों उससे उनके जीवन का सीधा जुड़ाव हो। निःसंकोच भाव से उन्होंने उन प्रसंगों एवं घटनाओं का उल्लेख किया है जिनका गहरा संबंध उनके व्यक्तित्व के विकास, एवं शिखर' तक पहुँचने में रहा है और जिन्होंने उनके जीवन की दशा और दिशा बदल दी । इसमें उनके परिवार, गाँव, परिवेश, स्कूल, कॉलेज, मित्र, सहयोगी, विरोधी सभी सम्मिलित हैं।

रामकथा को अपने जीवन का आधार बनाने वाले मिश्रजी का जीवन भी रामायण के ही समान है। रामायण केवल जीवन के आरंभ का मनोरम बालकांड ही नहीं है अपितु करूण रस से ओत प्रोत अरण्य कांड भी है और धधकती हुई अग्नि से प्रज्ज्वलित लंका काण्ड भी है तो अध्यात्म की ऊँचाइयों को छूने वाला उत्तर कांड भी है। मिश्र जी के व्यापक जीवनानुभव से युक्त इस कृति में जीवन और जगत के तमाम रंग बिखरे हैं। इसमें भी कहीं जीवन का उल्लास है तो कहीं व्यथा व करूणा है और कहीं अध्यात्म और दर्शन के रंग छलकते हैं। यह रचना उनके अनुभवों की ऐसी रचनात्मक आकृति है जहाँ पाठक लेखकीय सच से तादात्म्य या एकात्म स्थापित कर लेता है और यही वह बिंदु है जहाँ रचना और रचनाकार दोनो अपनी सार्थकता और अपनी सफलता प्राप्त करते हैं। राजेंद्र यादव इसी एकात्म को 'आइडेंटीफिकेशन' की संज्ञा देते हैं और मानते हैं कि " ऐसा हो नहीं सकता कि आप अपनी सफरिंग से, अपने भीतर की गहराइयों से, तकलीफों से जो बात करें वह पाठक के दिल को न छुए।"

किसी भी लेखक के लिए उसका परिवेश और संचित स्मृतियाँ सबसे